BA Part II(H)
Paper III

Dr Chiranjeev Kr Thakur
Sociology.

नगरीय समुदाय (Urban Community) ⇒ नगरीय समुदाय का विकास नगरों के विकास के क्रम में हुआ। नगरों की उत्पत्ति और विकास के सन्दर्भ में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है और न ही ये कहा जा सकता है कि नगरों का विकास या जन्म किसी विशेष ऐतिहासिक युग की देन है। वास्तव में मानवीय विकास के साथ ही नगरों का विकास प्रारम्भ हो गया केवल इतना था कि वर्तमान समय के नगरों से प्राचीन समय के नगरों में भिन्नता अवश्य थी। नगरीय समुदाय को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया जो इस प्रकार है-

विलकॉक्स के अनुसार "नगरों के अन्तर्गत हम उन समस्त क्षेत्रों को सम्मिलित कर सकते हैं जिनमें जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्गमील 1000 व्यक्तियों से अधिक हो, जहां कृषि कार्य से सम्बद्ध न हो।"

थियोडोरसन एवं थियोडोरसन के अनुसार," नगरीय समुदाय एक ऐसा समुदाय है जिसमें अधिक जनघनत्व, गैर कृषि कार्यों की प्रधानता, जटिल श्रम-विभाजन के कारण उत्पन्न उच्च श्रेणी का विशेषीकरण तथा स्थानीय सरकार की औपचारिक व्यवस्था पायी जाती है।

लुईस वर्थ के अनुसार," समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से एक नगर की परिभाषा सामाजिक भिन्नता वाले व्यक्तियों के बड़े, घने बसे हुए एवं और स्थायी निवास के रूप में की जा सकती है।"

वर्गल के अनुसार," नगर का सम्बन्ध उस समुदाय से है जहां अधिकांश लोग कृषि कार्य के अतिरिक्त अन्य उद्योगों में व्यस्त है।

सी. पी. लूमिस के अनुसार," नगर एक ऐसा समुदाय है जिसे अन्य समुदायों से जनसंख्या के आकार, घनत्व, व्यवसाय की प्रकृति तथा सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति आदि विशेषताओं के आधार पर पृथक किया जा सकता है।"

अतः स्पष्ट है कि नगर वह क्षेत्र है जहां जनसंख्या की बहुलता एवं विविधता पायी जाती है। गैर कृषि कार्य जटिल श्रम विभाजन, विशेषीकरण, औपचारिक तथा द्वितीयक सम्बन्धों की प्रधानता, सामाजिक नियन्त्रण के औपचारिक साधन तथा गैर कृषि कार्यों में समुदाय की संलग्नता ही नगरीय समुदाय कहा जायेगा।